International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-1 February – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

.महादेवी वर्मा के गद्य मे स्त्री चेतना

डॉक्टर सारिका धोंडिराम शेप

सार :–

महादेवी वर्मा बी. ए. और एम. ए. की परीक्षाओं में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। पिता जी की दार्शनिकता का पुत्री पर प्रभाव पहले से ही था। दर्शन के अध्ययन से चिन्तन का योग होने से इनके विचारों में विशेष निखार आ गया। यह निखार इनके साहित्यिक निबंन्धों से लेकर कविताओं, संस्मरणों, रेखाचित्रों तक में प्रस्तुत है। भारतीय दर्शनों में भी बौद्ध–दुखवाद और गांधी दर्शन का इन पर गम्भीर प्रभाव पड़ा।अब तक महादेवी ने अपनी करुण कोमल कविता से ही साहित्य में प्रवेश किया था। 'अतीत के चल–चित्र' उनकी प्रथम गद्य–पुस्तक है। रचना चाहे गद्य की हो, चाहे पद्य की, उसमें साहित्यकार के व्यक्तित्व का भाव अवश्य रहता है। साहित्यकार जो कुछ लिखता है, उस पर उसके अनुभवों, विचारों तथा मनोभावों की छाप उसी प्रकार रहती है, जिस प्रकार वस्तु की स्थिति के साथ उसकी छाया। यह छाया कभी स्पष्ट और कभी अस्पष्ट होती है, किन्तु उसका अस्तित्व अमिट रहता है। महादेवी वर्मा गद्य की विभिन्न रचनाओं में उन्होंने स्त्रीत्व के सभी पक्षों पर दृष्टि डाली है। '

मुख्य शब्दः *महादेवी वर्मा* **,** *गद्य*

प्रस्तावना :–

हिंदी–काव्य में महादेवी ने करुणा का जो श्रृंगार किया है, वह किसी दूसरे कवि से नहीं बन पड़ा। इसका यह मतलब नहीं कि करुणा अन्य कवियों में नहीं है, किन्तु वह उतनी मधुर तथा सुन्दर एवं आलोकमयी नहीं हो पायी, जितनी महादेवी के काव्य में। महादेवी के काव्य में करुणा करुण न होकर सरस सजल हो गयी है; क्योंकि बहिर्जगत में उन्होंने उसके व्यापक अस्तित्व की एक ऐसी आभा दिखा दी है, जो भावों तथा अभावों दोनों को अपनी समान सहानुभूति से सहज ही में बाँध देती है। यही उनके कवि की विशेषता है। अतीत के चलचित्र में भी हम इसी भाव–धारा का अविरल प्रवाह पाते हैं। स्वाभाविक भी यही है। कविता और कहानी, दोनों मानवता के प्रांरभिक साथी हैं, अंतर इतना है कि शिशु रूप से मनुष्य बिना किसी सार्थकता का ध्यान रखे हुए अपनी माँ से बोल उठता है – श्माँ कह एक कहानी '! किन्तु जीवन के संघर्ष में पड़कर वह जीवन की वास्तविकता का बोध कराने वाली कहानी से ही तुष्ट होता है। कवि और कहानीकार एक ही लोक के निवासी हैं; दोनों की क्रीड़ा–भूमि है, मानव जीवन। कवि यदि भावनाओं का गायक है तो कहानीकार उसका निरीक्षक। कहानीकार जिसका निर्माण करता है, कवि उसका उपयोग करता है। दोनों का उद्देश्य एक है – जीवन की मार्मिकता का संवेदनात्मक उद्घाटन।

जिस प्रकार गीति कविता एक ही मानव की तन्मयता में सजीव हो उठती है, उसी प्रकार एक छोटी कहानी एक ही भावना के उन्मेष–क्षणों में अपना जीवन पा सकती है। अस्तु, हम कह सकते हैं कि कवि और कहानीकार के सम्मिलन से जो साहित्य–सृष्टि होगी, वह मानव मात्र के लिए कल्याणकारी होगी। श्अतीत के चलचित्रश हिंदी साहित्य के लिए ऐसा ही सुफल है। इसमें महादेवी जी की कुछ संस्मरणात्मक कहानियों का संग्रह है। इन कहानियों के विषय में लेखिका का यह वक्तव्य उल्लेखनीय है रू श्समय–समय पर जिन व्यक्तियों के सम्पर्क ने मेरे चिन्तन को दिशा और समवेदन को गति दी है, उनके संस्मरणों का श्रेय जिसे मिलना चाहिए, उसके संबंध में कुछ विशेष नहीं बता सकती। कहानी एक युग पुरानी और करुणा से भीगी भी है।

मेरे एक परिचित परिवार में, गहस्वामिनी ने अपने एक वृद्ध सेवक को किसी तुच्छ–से अपराध पर निर्वासन का दण्ड दे डाला और फिर उनका अहंकार उस अकारण दण्ड के लिए असंख्य बार माँगी गयी क्षमा का दान भी न दे सका। ऐसी स्थिति में वह दरिद्र, पर स्नेह में समृद्ध बूढ़ा कभी गेंदे के मुरझाये हुए फूल, कभी हथेली की गर्मी से पसीजे हुए चार बताशे और कभी मिट्टी का एक रंग–हीन खिलौना लिये अपने नन्हें प्रभुओं की प्रतीक्षा में पुल पर बैठ रहता था। नये नौकर के साथ घूमने जाते हुए बालकों को जब वह अपने तुच्छ उपहार देकर लौटता, तब उसकी आँखें गीली हो जाती थीं। सन् ३30 में उस मृत्यु को देखकर मुझे अपना बचपन और उसे अपनी ममता से घेरे हुए रामा इस तरह स्मरण आये कि अतीत की अधूरी कथा लिखने के लिए मन आकुल हो उठा।

महादेवी वर्मा की गद्य रचनाओं में स्त्री विमर्श

महादेवी जी ने अपने साहित्य में स्त्रियों को कभी न हार मानने की प्रेरणा दी है। महादेवी जी ने कठिन परिस्थितियों में एकता की खोज की है, इसी निश्चय के बल पर वह यह कह सकी– ''मार्ग चाहे जितना अस्पष्ट हो दिशा चाहे कितनी कुहराछन्न हो, परन्तु भटकने, दिग्भ्रान्त होने और चली राह में पग–पग पर गिरकर पश्चाताप करते हुए लौटने का अभिशाप मुझे नहीं मिला।''–महादेवी वर्मा गद्य की विभिन्न रचनाओं में उन्होंने स्त्रीत्व के सभी पक्षों पर दृष्टि डाली है। ' श्रृंखला की कड़ियाँ' में स्त्री के अस्तित्व की रक्षा और न्याय के लिए नारी बंधनों की श्रृंखला को तोड़ने का अथक प्रयास किया और स्त्री की गरिमा भी बनाए रखी है।

''अपने कर्तव्य की गुरूता भली–भाँति हृदयंगम कर यदि हम अपना लक्ष्य स्थिर कर सकें तो हमारी लौह–श्रृंखलाएँ हमारी गरिमा से गलकर मोम बन सकती हैं, इसमें सन्देह नहीं।''

'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' जैसे संस्मरणों और रेखाचित्रों में अपने जागरुक दृष्टिकोण का परिचय देकर वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और परंपरागत स ंस्कारों का दारुण आघात किया।

महादेवी जी ने स्त्री विमर्श को स्त्री के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टिकोणों से देखकर ही अपने विचार व्यक्त किए हैं। महादेवी के संस्मरण 'गर्म लोहे से लिखी घटनाएं' हैं जिनमें विमाता का दुर्व्यवहार, अकाल वैधव्य, बाल–विवाह और वृद्ध विवाह के दुष्परिणाम, अवैध मातृत्व, वैश्या विवाह का समाज द्वारा घोर विरोध, चरित्र भ्रष्ट पति के साथ जीवनयापन की समस्या आदि विषयों को स्थान दिया।

महादेवी का स्त्री–विमर्श पर मूल्यांकन यह कहता है कि स्त्री को अपनी इस दशा के लिए स्वयं भी जिम्मेदार लेनी चाहिए। ''बर्बरता की पहली सीढ़ी से सभ्यता की अन्तिम सीढ़ी तक युद्ध मनुष्य जाति का साथ देता आया है।''

महादेवी जी ने ' श्रृंखला की कड़ियाँ' में स्त्री की सामाजिक पराधीनता की गाथा कही है। जिसमें उनकी स्त्री कठिन त्याग से अर्जित गृह, संतान तथा जीवन को आरक्षित देखकर और मानव की आवाभगत पुरानी बर्बरता का नया परिचय पाकर संपूर्ण शक्ति के साथ जाग उठी है। स्त्री को पशु न मानकर और विवाह के नैतिक पतन के कारणों को सम्मुख रख उसमें संशोधन का आग्रह किया।

''विशेषकर नारी के लिए पशुबल की न्यूनता को आत्मबल से पूर्ण कर लेना स्वभावसिद्ध है। वह यदि सममुख युद्ध में अस्त्र–संचालन द्वारा प्रतिद्वन्द्वियों को विस्मित कर सकी है तो बिना अस्त्र के या बलदर्शन के असंख्य विपक्षियों से घिरी रहकर भी अपने समान की रक्षा कर चुकी है।''

महादेवी जी ने युद्ध के क्षेत्र में भी स्त्री–विमर्श की गाथा को अग्रणी दिखाया है। नारी को दुर्बलता से लाघने की सीढ़ी के दर्शन कराए है। ''जिन मानवीय दुर्बलताओं को वे स्वयं अविरत संयम और अटूट साधना से भी जीवन के अन्तिम क्षणों तक न जीत सकेंगे उन्हीं दुर्बलताओं को, किसी भूली हुई अस्पष्ट सुधि द्वारा जीत लेने का आदेश वे उन अबोध बालिकाओं को दे डालेंगे जो जीवन से अपरिचित हैं।''स्त्री के लिए जो भी अभिशाप हैं महादेवी जी ने उनका विवरण अपनी रचनाओं में भली प्रकार किया है।

महादेवी जी ने छायावाद में स्त्री को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। छायावाद में स्त्री विमर्श, स्त्री सशक्तिकरण बहुआयामी रुपों में व्यंजित हुआ है। महादेवी ने स्त्री–विमर्श जागरण का जो कार्य छायावाद में किया है, वह शायद न किसी ने किया है और न ही कोई संभवतः कर पायेगा।

''संसार की प्रगति से अनभिज्ञ, अनुभव–शून्य, पिंजरबद्ध पक्षी के समान अधिकार–विहीन, रूग्ण, अज्ञान नारी से फिर शक्ति सम्पन्न सृष्टि की आशा की जाती है, जो मृगतृष्णा से तृप्ति के प्रयास के समान ही निष्फल सिद्ध होगी।'' महादेवी ने स्त्री के शोषण के प्रति, अत्याचार के प्रति, स्त्री अधिकारों के प्रति अपनी आवाज को बुलंद किया हैं। छायावाद में महादेवी ने स्त्रियों के सशक्त होने, अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होने का गायन किया है। महादेवी का स्त्रियों पर चिंतन बड़े ही शालीन ढंग से पुरुष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था पर अनेक सवाल खड़े करता है।

स्त्री के शोषण के प्रति महादेवी जी ने अपना आक्रोश व्यक्त किया है और स्त्री को अपनी दशा के लिए स्वयं भी जिम्मेदार ठहराया है। महादेवी जी कहती है–''एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को अधिक भारी बनाए बिना नहीं रहती।'' महादेवी के गद्य–लेखों से इस बात का प्रमाण मिलता है कि महादेवी की आत्म–चेतना एवं बौद्धिक दृष्टि आज की परिस्थितियों एवं समस्याओं से विमुख नहीं है, महादेवी ने इन पर गंभीर चिंतन किया है।

''यदि यह स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सकें कि बर्बरों तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब कुछ ले लिया, पर हम अपना मातृत्व किसी भी प्रकार न देंगी तो उनकी समस्यायें तुरन्त सुलझ जावें।''

महादेवी वर्मा ने स्त्री–समाज में जो अपनी छाप छोड़ी है, उसे हिन्दी साहित्य के इतिहास में युगों तक याद किया जायेगा। महादेवी की इस छवि को यदि कोई बदलने की कोशिश करेगा तो नई आलोचनाओं का सामना भी अवश्य ही करना पड़ेगा। यदि महादेवी वर्मा को छोड़ किया जाए , तो दूसरी बड़ी स्त्री लेखिका इस दौर में दूर तक दिखाई ही नहीं देती है। महादेवी वर्मा ने स्त्री–विमर्श के सवाल को बड़े रुप में प्रस्तुत किया है।

''कुछ तर्कशील पुरूषों का कहना है कि स्त्रियों को स्वयं अपनी रक्षा करने से कौन रोकता है? इस कथन पर हँसना चाहिए या रोना, यह नहीं कहा जा सकता।''

महादेवी की पुस्तक 'शृंखला की कड़ियाँ' स्त्री मुक्ति के उपायों की ओर गहरी चिंता प्रकट करती है। पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ महादेवी वर्मा ने अपनी बुलंद आवाज उठाई है। महादेवी वर्मा ने पितृसत्ता का भी विरोध किया है। स्त्री की खराब दशा के लिए महादेवी वर्मा संपति के असंगत और अनियत्रित विभाजन को जिम्मेदार मानती हैं।

''युगों की कठोर यातना और निर्मम दासत्व ने स्त्रियों को अपनापन भी भुला देने पर विवश न किया होता तो क्या ये अपने सम्मान की रक्षा में समर्थ न हो सकतीं?'' स्त्री–मुक्ति के आख्यान रचने वाली महादेवी वर्मा का स्त्री सम्बन्धी चिंतन

भारतीय संदर्भ में स्त्री विमर्श का रास्ता तलाशने का सशक्त एवं सार्थक प्रयास है। महादेवी वर्मा का स्त्री विमर्श पर चिन्तन कई दृष्टियों से महत्व है, महादेवी की यह चिन्ता स्त्री–विमर्श का इतिहास बनाती है। महादेवी वर्मा का स्त्री–चिन्तन उस समय का है जिस समय न तो भारतीय स्त्री जागरुक थी और न ही उस समय कोई स्त्री आन्दोलन की शुरुआत हुई थी।

''आज विवश पशु के समान इन्हें हाँक ले जाना इसलिए सहज है कि ये पशुओं की श्रेणी में बैठा दी गई और ज्ञानशून्य कर्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु का इन्हें बोध नहीं है।''

भारत में स्त्री–विमर्श के माध्यम से उठे स्त्री आंदोलन के कई वर्ष पहले महादेवी ने भारतीय नारी की समस्याओं को न केवल सशक्त ढ़ग से प्रस्तुत किया है, बल्कि स्त्री एवं समाज के हितों को भी ध्यान में रखा है। ''महादेवी पश्चिमी–नारीवादियों की तरह न तों कभी पुरुष–जाति का विरोध करती हैं, और न ही पुरुष–प्रवृतियों को अपनाने की होड़ में यकीन करती है।''

महादेवी जी का नारी विषयक चिंतन बड़े ही शालीन ढ़ग से पुरुष वर्चस्ववादी समाज व्यवस्था पर अनेक सवाल खड़े करता है। 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में महादेवी की स्त्री–विमर्श संवेदना के सामाजिक पहलूओं का उद्घाटन हुआ है। आज स्त्री–विमर्श साहित्य का केन्द्र बिन्दु है, लेकिन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री की स्थिति में कोई विशेष बदलाव दिखने को नहीं मिल रहा है।

''भले ही आज राजनैतिक और सरकारी आरक्षण के लाभ से नारी की सामाजिक छवि बढ़ी हो, किन्तु उसकी अपने परिवार के भीतर की स्थिति में कोई खास अंतर नहीं आया है। इस दृष्टि से महादेवी का नारी चिंतन कई अर्थ रखता है क्योंकि उनका नारी चिंतन उस आधे नागरिक जीवन का चिंतन है, जो मात्र पुरूषों को कटघरे में खड़ा नहीं करता है। वस्तुतः महादेवी का नारी चिंतन किसी प्रकार की प्रभुत्ता की आकांक्षा नहीं करता बल्कि इसका स्वर नपा–तुला और सामंजस्यपूर्ण है।''

महादेवी वर्मा स्त्री की मानसिक एवं शारीरिक बनावट को ध्यान में रखकर उसे पुरुष का पूरक मानती हैं जिनके अन्तर्सम्बन्धों पर समाज की पूर्णता निर्भर है। भले ही राजनैतिक और सरकारी आरक्षण के लाभ से स्त्री की स्थिति और छवि में कुछ सुधार दिखाई दे रहा है, लेकिन स्त्री की पारिवारिक स्थिति में कोई खास अन्तर नहीं दिखाई देता है। महादेवी जी का कहना है– ''नारी का मानसिक विकास पुरुषों के मानसिक विकास से भिन्न परन्तु अधिक द्रुत, स्वभाव अधिक कोमल और प्रेम–घृणादि भाव अधिक तीव्र तथा स्थायी होते है।'महादेवी स्त्री को पुरुष की 'सहधर्मचारिणी' और 'सहभागिनी' मानती है, जिसका कार्य अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्ण कर उसके जीवन को अधिक से अधिक सफल बनाना।

''प्राचीनतम काल में मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में, पत्नी–पुत्रादि के लिए गृह और उसकी पवित्रता की रक्षा के लिए नियमों का आविष्कार कराने में स्त्री का कितना हाथ था, यह कहना कठिन है, परन्तु उसके व्यक्तित्व के प्रति समाज का इतना आदर और स्नेह प्रकट करना सिद्ध करता है कि मानव–समाज की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति उसी से संभव थी। प्राचीन आर्य नारी के सहधर्मचारिणी तथा सहभागिनी के रूप में कहीं भी पुरूष का अन्धानुसरण या अपने आपको छाया बना लेने का आभास नहीं मिलता।'

स्त्री की समस्याओं के मूल में महादेवी परिवार एवं विवाह जैसी संस्थाओं तथा स्त्री की आर्थिक स्थिति को देखती है। इस दृष्टि से महादेवी का स्त्री चिन्तन कई अर्थ रखता है। महादेवी वर्मा का स्त्री–विमर्शीय चिन्तन किसी तरह की प्रभुत्ता की इच्छा नहीं रखता है। महादेवी का स्वर तो नपा–तुला और सामजस्यपूर्ण है।

''स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में प्रधान और कदाचित् उसे सबसे अधिक जड़ बनाने बाली अर्थ से सम्बन्ध रखती है और रखती रहेगी, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी की अनिवार्य आवश्यकता है। अर्थ का प्रश्न केवल उसी के जीवन से सम्बन्ध रखता है, यह धारणा भ्रान्ति मूलक है।

महादेवी स्त्री की परम्परा का मुख्य आधार अर्थ सम्बन्धी समस्यायों को मानती हैं। समाज ने स्त्री के सम्बन्ध में अर्थ का ऐसा विषम विभाजन किया है कि साधारण श्रमजीवी वर्ग से लेकर सम्पन्न वर्ग की स्त्रियों तक की स्थिति दयनीय ही कही जाने योग्य है। यह केवल उत्तराधिकार से ही वंचित नहीं है, वरन् अर्थ के सम्बंध में सभी क्षेत्रो में एक प्रकार की विवशता के बंधन में बंधी हुई है। कहीं पुरुष ने न्याय का सहारा लेकर और कहीं अपने स्वामित्व की शक्ति से लाभ उठाकर उसे इतना अधिक परावलम्बी बना दिया है कि वह उसकी सहायता के बिना संसार–पथ पर एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती। स्त्री को परतंत्र बनाने में पति–पुरुष की 'स्वामित्व' की मानसिकता की बड़ी भूमिका है।

''स्वामित्व' का यह क्रूर बंधन उस सामन्तवादी व्यवस्था की देन है जहां एक विशेष समाज (दलित और स्त्री) को गुलाम की तरह देखने की प्रवृति रही है। स्त्री और दलित के रुप में अपनी विशेष पहचान बना चुका यह समाज मुख्य धारा में कहने को तो स्वतंत्र होता है पर आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव में कई प्रकार की बेड़ियों में जकड़ा हा`ता है।''

महादेवी वर्मा ने स्त्री समस्याओं पर विचार करके, साथ ही उसे सुलझान` का भी प्रयास किया है। वे स्त्री के स्वावलम्बन के साथ ही आत्म विश्वास एवं ज्ञान की आवश्यकता पर भी जोर देती है, ताकि वे अपने अस्तित्व की रक्षा एवं अन्याय का विरोध कर सकें। शिक्षा को स्त्रीमुक्ति का उपाय बताते हुए महादेवी जी कहती है– ''इस समय हमारा इष्ट स्वतंत्रता है, जिसके द्वारा हम अपने जंग लगे हुए ब ंधन को एक ही प्रयास में काट सकती हैं। इसके लिए शिक्षा चाहिए; उसे चाहे किसी भी मूल्य पर क्रय करना पड़े, परन्तु आज वह हमें मंहगी न लगेगी, कारण वह हमारे शक्ति के, बल के कोष की कुंजी है। वही उस व्यूह से निकलने का द्वार है, जिसमें हमारे दुर्भाग्य ने हमें न जाने कब स` घेर रखा है।''

सही बात तो यह है कि आजकल स्त्री शिक्षा या तो उपाधि पाने के लिए ली जाती है या सुयोग्य वर पाने की आशा में। स्त्री का ध्येय सभ्य और सुस ंस्कृत समाज का निर्माण करना है। जिसके लिए उसे कठिन संघर्ष की आवश्यकता है। ''केवल मनुष्य बनने के लिए, जीवन का अर्थ और उपयोग समझने के लिए कौन विद्या चाहता है, यह कहना कठिन है।''

महादेवी का रचना संसार

काव्य साहित्य

महादेवी जी मुख्य रूप से छायावादी कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं, किन्तु उनकी ख्याति उनके गद्य–साहित्य की उत्कृष्टता को देखते हुए कम नहीं है। उन्होंने कुछ विचार प्रधान निबन्ध और कुछ ललित निबन्धों की भी रचना की है किन्तु उनके गद्यकार रूप की प्रौढ़ता उनके रेखाचित्रों और संस्मरणों में देखने को मिलती है।

'महादेवी साहित्य रू एक नया दृष्टिकोणश की भूमिका में डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र लिखते हैं, ष्श्री मती महादेवी वर्मा हिन्दी की उत्कृष्ट कवयित्री, कुशल चित्रकर्मी तथा प्रसिद्ध गद्य–लेखिका हैं। उनकी रचनाएँ हमें दो रूपों में मिलती हैं – एक, पद्य के रूप में तथा दूसरे, गद्य के रूप में।

–– इसके आगे वे मीरा के साथ तुलना करते हुए लिखते हैं, "कविता के क्षेत्र में महादेवी आधुनिक भारत की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री हैं। वे आधुनिक काल की मीराँ हैं। मीराँ में निश्छल एवं सहज प्रवाह है, महादेवी में प्रशान्त कला एवं संयम है।

मीराँ कवि अधिक हैं, महादेवी कलाकार अधिक हैं। मीराँ का व्यक्तित्व एक विशिष्ट कोटि का है, महादेवी केवल साहित्यकार हैं। कुल मिलाकर, मीराँ हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री हैं, किन्तु महादेवी का अपना एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व है, जिसकी समता अन्य कोई कवयित्री नहीं कर सकती।

महादेवी वर्मा की साहित्य प्रतिभा को उजागर करते हुए डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त जी महादेवी का गद्य : एक मूल्यांकन नामक पुस्तक के श्दो शब्दश में लिखते हैं, "कवयित्री महादेवी हिन्दी साहित्य की सर्वोत्तम प्रतिभाओं में से एक हैं, काव्य में तो उनकी देन अप्रतिम है ही गद्य में भी उनका योगदान अतुलनीय है। जहाँ उन्होंने अपनी काव्य–रचनाओं के द्वारा छायावाद को विशिष्ट संवेदना, उदात्त अनुभूति एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के बल पर नूतन भंगिमा प्रदान की, वहाँ गद्य के क्षेत्र में भी उन्होंने लोक जीवन के विभिन्न पक्षों, निम्नवर्गीय समाज के उपेक्षित पात्रों एवं नारी– जीवन की विभिन्न स्थितियों का अंकण पूर्ण सहानुभूति से करके उसे समृद्ध किया है। किन्तु फिर भी अब तक महादेवी के कवि रूप का जितना विवेचन–विश्लेषण हुआ है, उतना गद्यकार का नहीं हुआ।

महादेवी के गद्य और पद्य के विषय में बताते हुए परमानन्द श्रीवास्तव श्स्त्री कल्पना और महादेवीश नामक लेख में लिखते हैं, " छायावाद में महादेवी वर्मा अकेली हैं जिनकी कल्पना को विशेष अर्थ में श्स्त्री कल्पनाश कहा जा सकता है। एक ओर उन्हें जनाबाई, बहिनाबाई, सहजोबाई, मीरा के साथ पड़ा जा सकता है, तो दूसरी ओर उन्नीसवीं सदी की अमरीकी कवयित्री एमिली डिकेन्सन के साथ। एमिली ने मूक कल्पना (Silent Imagination) पद का प्रयोग किया है। समय में रहते समयातीत की कल्पना महादेवी को अद्वितीय बनाती है। स्त्री जीवन के धुंधले परिदृश्य में महादेवी सिर्फ दुखवाद का महिमा मंडन नहीं करतीं, बल्कि निजता में राग–विराग के मिश्र रसायन को काव्यानुभव में ढालती हैं। अगर सामजिक सरोकार उनसे कहानियाँ, रेखाचित्र, निबन्ध और 'शृंखला की कड़ियाँ जैसी विमर्श प्रधान कृतियाँ लिखाते हैं, तो कविताओं में वे एक ऐसा रहस्यलोक निर्मित करती हैं – जिसमें दर्पण, केशपाश, वेणीबन्धन, अलक्तक जैसे प्रसाधनों से सहज शृंगार को संभव बनाती हैं। आखिर जीवन और कविता एक है। सौन्दर्यलोक दोनों को महत्वपूर्ण बनाता है।

आधुनिक कवियों में महादेवी को महत्वपूर्ण बताते हुए परमलाल अहिरवाल लिखते हैं, "आधुनिक कवियों में श्रीमति महादेवी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह इसलिए नहीं कि वे स्त्री हैं, वरन इसलिए कि उन्होंने आधुनिक काव्य की कला में सर्वाधिक योग दिया है। छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद और उसके उन्नायक सूर्यकान्त त्रिपाठी श्निरालाश तथा सुमित्रानन्दन पंत के बाद उन्हीं की गणना होती है। इन कवियों की अपेक्षा छायावादी काव्य को महादेवी की सबसे बड़ी देन कलात्मक देन ही है जो उनके कंठ से विशुद्ध अनुभूतिमय होकर फूटी है। हृदय की सूक्ष्मतम भावनाओं को जितना सफलता के साथ महादेवी ने व्यक्त किया है, उतनी सफलता के साथ अन्य कोई कवि शायद ही कर सका हो।

छायावादी कवियों में महादेवी के काव्य के भावपक्ष तथा कलापक्ष के विषय में उल्लेख करते हुए महादेवी नामक पुस्तक में इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं, "छायावादी कवियों में महादेवी का विशिष्ट स्थान है। वह इसलिए नहीं कि वह नारी है, वरन इसलिए कि उन्होंने छायावादी काव्य के भावपक्ष तथा कलापक्ष को विकसित किया है। महादेवी की अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा इस काव्य को सबसे अधिक देन यह है कि कविता उनके कण्ठ से विशुद्ध अनुभूतिमय होकर फूटी है। हृदय की सूक्ष्मतम एवं गहनतम भावनाओं को जितनी सफलता के साथ महादेवी ने व्यक्त किया है, उतनी सफलता के साथ अन्य छायावादी कवि शायद ही कर सके हों।

इससे आगे वे लिखते हैं, "महादेवी के काव्य का यह गुण है कि उनके गीत सीधे हृदय को झंकृत करते हैं। छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि मादकता को मिलाया, निराला ने उसे मुक्त छन्द दिया, पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर उसे सुडौल और सरल बनाया तो महादेवी ने उसकी भावात्मकता को समृद्ध किया है। इसका यह अर्थ नहीं कि प्रसाद, निराला

और पंत ने भावपक्ष की उपेक्षा की है उनकी कविता में भी भावपक्ष का समृद्ध रूप निखरकर सम्मुख आया है। महादेवी का कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष के प्रति अधिक आग्रह है।

महादेवी ने किस प्रकार कविता लिखना प्रारम्भ किया इसका उल्लेख करते हुए वे लिखती हैं, " काव्य–यात्रा के सन्दर्भ में कहें तो और भी अनायास मन हो जाता है या उत्साहित हो जाता है। बहुत कुछ स्मरण है। मुझे ऐसा लगता है, मानो विशेषकर कवि की एक नियती होती है जिससे वह प्रयत्न करने पर भी मुक्त नहीं होता। साधारण जीवन में मनुष्य अपनी आजीविका को ध्यान में रखकर कुछ सीखता, कुछ लिखता, कुछ करता है। वह कार्य अलाभकर हो तो उसे छोड़ भी सकता है। कविता के सम्बन्ध में ऐसा नहीं होता। उसके लिये अनेक व्यक्तियों ने बहुत कष्ट सहे हैं। किन्तु उसको छोड़ नहीं पाए। मेरी कविता यात्रा तो और भी विचित्र है। मेरी माँ बालिका–वधू के रूप में जबलपुर से फर्रुखाबाद पहुंची तब वे अपने साथ रामचरितमानस ले गईं; पूजा–पाठ ले गईं और हिन्दी ले गईं। इस प्रकार हमारे परिवार में जो उर्दू और फारसी का ही भक्त था, हिन्दी पहुँची। मैं सबसे बड़ी लड़की थी घर की। इसलिए उन्होंने अपने पूजा–पाठ में मुझको सम्मिलित कर लिया। पाँच–छरू वर्ष की अवस्था से ही कभी मीरा के पद, कभी सूर के पद, कभी रामचरितमानस की चौपाइयों का सस्वर गान सुन सुनकर मैंने भी तुक मिलाना आरम्भ किया।

उस समय समझ तो बहुत थी नहीं। लेकिन तुक मिल ही जाता था। सब से पहले ठाकुर जी के ही सम्बन्ध में सहानुभूति जागी। वह शीतकाल में हमें भी नहला देती थीं। ठाकुर जी भी ठंडे जल से नहाते थे। हमें जो कष्ट होता था, लगता है ठाकुर जी को भी होता होगा। तो हमने तुक जोड़ा – माँ के ठाकुर जी भोले हैं। ठंडे पानी से नहलाती। ठंडा चन्दन इन्हें लगाती। इनका भोग हमें दे जाती। तब भी कभी नहीं बोले हैं। लगा कि ठीक हो गया। अब इसी तरह से तुक मिलने लगे। फिर पंडित जी आए, हमको पढ़ाने। पंडित जी ने देखा कि तुक तो मैं मिलाती ही रहती हूँ। उन्होंने ब्रजभाषा में लिखवाना आरम्भ किया। मैंने प्रयाग आने तक ब्रजभाषा में ही लिखा; लेकिन एक आश्चर्य यही है कि ब्रजभाषा का जो काव्य था, वह उस समय की किसी भी मेरी कविता में नहीं है।

भाषा वही है; किन्तु जो कहा जाता था उस समय ब्रजभाषा में, वह नहीं कहा है मैंने, इसमें कुछ पंक्तियाँ मुझे स्मरण हैं– श्बाँधे मयूर वन के डोरेन में हिंडोरन पर नित फूरियोंश और आये हैं श्शीतलमन्द बयार तो अंक दुलार कबूलियों।' और ' भौंर के गीतन पर तुम रीझियों तितली के नर्तन पर फिर मूलियों। फूल तुम्हें तब ही कह हैं जब कॉटन में धंसि के हँसि फूलिहो।श ये मेरे बहुत बचपन की कविता है। लेकिन इसी को मैंने फिर बार–बार कहा है। आगे चल के कुछ ऐसी बातें भी कही हैं। जो शायद बचपन में दस ग्यारह बरस की बालिका तो नहीं कहती है। जैसे श्आँसुन सो अभिषेक कियो, पुतरी में निराजन ज्योति जराई, साँसन में, बुन के सपने, एक फूल माल गुनी पहनाई। तीनों के ठाकुर तो अपनी रचना में गए हैं, हेराई–पीर की मूरती ही हमने अब तो मन मन्दिर में ठहराई।

डॉ. धनंजय वर्मा महादेवी नामक पुस्तक में लिखते हैं, ष्नीरजा (1931–34) महादेवी के काव्य का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम है। श्नीहारश से श्रश्मिश तक कल्पना – बहुलता मिलती है, लेकिन 'नीरजा' के गीतों में चिन्तन और अनुभूति प्रधान है। साथ ही अभिव्यंजना के क्रमिक विकास के दर्शन भी यहाँ होते हैं। 'नीरजा' में चिन्तन और अनुभूति, गीत और संगीत का समन्वय मिलता है। इसमें कवयित्री का अंतदर्शन और आत्मनिष्ठता सर्वाधिक प्रधान होकर आयी है। इसमें श्नीहारश और श्रश्मिश से अधिक आत्म – चेतना के स्वर भी हैं। 'नीरजा' एक साथ स्वच्छन्दतावाद की दोनों प्रवृतियों – छायावाद और रहस्यवाद का प्रतिनिधित्व कर सकती है। कला में वह अंशतः छायावादी है और भावधारा में रहस्यवादी। श्नीरजा के पहले उनके रहस्यवाद की कोई दृढ़ भूमि नहीं थी। उसे अनुभूति का संस्पर्श यही मिलता है और यहीं वे गहरी उतरती हैं। उनकी अद्वैत भावना यहाँ रागात्मक तल्लीनता से तीव्र होकर आयी है। 'नीहार' की भावाकुलता और श्रश्मिश के

दार्शनिकीकरण के पश्चात् 'नीरजा' में एक संतोष की भावना आती है। उनका दुःखवाद अलौकिक है, उनका रहस्यवाद भारतीय रहस्यवादी परम्परा में नया है, उनकी वेदना और प्रणयानुभूति अलौकिक है, यह श्नीरजाश प्रमाणित करेगी।

'साहित्यकार महादेवीश नामक पुस्तक में हर्षनन्दिनी भाटिया श्नीरजाश के विषय में लिखती हैं, "नीरजा में कवयित्री की सन 1931 से 1934 के मध्य लिखी हुई कविताएँ हैं। यहाँ संख्या पिछले संग्रहों से ही अधिक नहीं सर्वाधिक है – 581 इस संग्रह की प्रथम कविता भी दुःखवाद से प्रारम्भ होती है:

प्रिय इन नयनों का अश्रु नीर!

दुख से आविल सुख से पंकिल,

बुद् बुद् से स्वप्नों से फेनिल,

बहता है युग–युग से अधिर!

पर इस संग्रह की कविताओं में अथवा गीतों में चिन्तन की प्रधानता है। यह काव्यानुभूति का तीसरा सोपान है जिसको मुक्तक श्गीतिकाव्यश की संज्ञा दी जा सकती है।

गद्य साहित्य

पद्य के अतिरिक्त महादेवी का गद्य – साहित्य भी कम महिमामय नहीं है। उनके गद्य सहित्य की प्रमुखतः तीन विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। पहली विशेषता संवेदनशील और चित्ररचना की है जिसका विकास उनके संस्मरणों तथा रेखाचित्रों में हुआ है। दूसरी विशेषता यथार्थतः विद्रोहमूलक प्रखर वैचारिक चेतना की है जिसका विकास श्शृंखला की कड़ियाँश में हुआ है। तीसरी विशेषता चिन्तन, मनन, विचार – विश्लेषण और परीक्षण – मूल्यांकन की है जिसका विकास उनके विवेचनात्मक गद्य में हुआ है।

गद्य लेखन के सन्दर्भ में महादेवी जी लिखते हैं, " हमारे यहाँ कहा गया है कि गद्य कवि का निकष है – 'गद्यं कवीनाम् निकषः वदन्तिश। कवि के लिये उन्होंने गद्य को कवि की कसौटी निश्चित किया है। यह मेरे विचार में बहुत उचित नहीं जान पड़ता, कयोंकि कविता से गद्य का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है और अच्छा कवि होने के लिए कवि अच्छा गद्यकार हो, यह भी आवश्यक नहीं, किन्तु यह कहा गया है और चूँकि मैंने गद्य लिखा है, इसलिए मुझे भी उसमें कुछ कहना ही चाहिए, कयोंकि गद्य की यात्रा भी लम्बी है, उतना ही। इसका एक बड़ा कारण तो यह है कि मेरे जो गुरु थे वे इस सम्बन्ध में बड़े ही कट्टर थे। वे बहुत ध्यान देते थे भाषा के सम्बन्ध में।

हमारे समय में सुलेख लिखना और अच्छा गद्य लिखना बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता था और जहाँ तक मैं समझती हूँ, हमारे प्राचीन साहित्य में गद्य का जितना विस्तार है, जितने प्रकार हैं, अन्य किसी साहित्य में नहीं मिलेंगे। ब्राह्मण – ग्रंथों में, उपनिषदों में और हमारे यहाँ जो एक प्रणाली है शास्त्रार्थ की; वह तो अद्भुत है। उसके लिए तर्क से सन्नद्ध रहना पड़ता है व्यक्ति को। मैं साधारण रूप से निबंध लिखने लगी। फिर ऐसा हया कि जब मैं प्रयाग आई तो मैं शायद छठे दर्जे में थी और क्रास्थवेट विद्यालय में एक पेड़ की डाल पर बैठकर लिखा करती थी। वह बागीचा एक खटिक का था। वह बहुत – सी मुर्गियाँ पालता था। मुर्गी के बच्चे मुझको बड़े अच्छे लगते थे। वे फूल जैसे होते हैं।

उन्हें मैं रोज गिन लेती थी, तब बैठकर कविता लिखती थी। एक दिन उसमें एक बच्चा गायब था। मैंने उस खटिक से पूछा तो उसने बताया, "एक हमारी नयी टीचर आई थीं ले गईं।" मैंने कहा, "उतने छोटे बच्चे को कैसे पालेंगी?" वह हसने लगा, कहा, ष्पालेंगी नहीं, खाएँगी!" अब तो मैंने कविता – पुस्तिका और सब समेट कर रख दिया और जाकर अपने कमरे में लेटकर रोना शुरू किया। जब मैं खाने नहीं गई तो मैट्रन आईं, उन्होंने पूछा, "कया बात है?" उनको आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, "ये कया बात है?ष वे उस टीचर के पास गईं। उनसे कहा।

उस समय तक मर्गी का बच्चा मारा नहीं गया था। डालिया के नीचे ढका था। उन्होंने कहा, "महादेवी खाना नहीं खा रही है। आप इसको न मारिए, दे दीजिएष। उन्होंने दे दिया। उसको ले जाकर मैंने रखा और तब उसके बाद मेरे मन में आया की सब की पहचान रखनी चाहिए, नहीं तो कोई और उठा ले जाएगा। तब मैंने लिखा, श्उसे चोख पीले रंग के पंजे ऐसे और पंख इतने – इतने निकले हैं और आँख ऐसी है, उसका नाम मूंगा है ये मेरी पहले संस्मरण की भूमिकाएँ हैं। फिर उसके बाद मैंने बहुत – से पशु – पक्षियों का विवरण लिखा। एक नौकर था बेचारा हमारे पड़ोस में। उसकी मालकिन अप्रसन्न हुईं उससे तो उसको उन्होंने निकाल दिया। वह बच्चों को बहुत चाहता था।

उपसंहार

हिन्दी साहित्य जगत् में विख्यात कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा से सभी परिचित हैं, पर मूलतः वे कला प्रेमी हैं। यही कारण है कि साहित्य एवं चित्रकला दोनों में उनकी समान गति है और उसका समन्ययात्कम रूप उनके सृजनात्मक साहित्य में दृष्टिगत होता है। कवि रूप में जो महादेवी अन्तर्मखी हैं वहीं गद्यकार के रूप में जीवन को समीप से देखती हैं। महादेवी हिन्दी के मौलिक गद्य – शैलीकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनके गद्य में उनके कवि – हृदय की विशालता, उनकी कल्पना शक्ति, उद् भावना वृत्ति इतनी घुलमिल गई है कि उनका सृजनात्मक गद्य जहाँ एक एक ओर चिन्तनपूर्ण हो गया है वहाँ दूसरी ओर मानवमय। 'गद्य और गद्य साहित्य' का सारांश यह है कि संसार की सभी भाषाओं के प्राचीनतम साहित्य को देखने से ज्ञात होता है कि साहित्य का आरम्भिक रूप पद्यात्मक ही पाया जाता है। सृजनात्मक गद्य साहित्य की अभिव्यंजना पद्धतिश में निम्नलिखित संदर्भो में उनकी गद्य कला का विश्लेषण किया गया है– भाषा, शब्द–प्रयोग, अलंकार, और चित्र – विधान –– प्रस्तुत अध्याय का सारांश निम्नवत है– महादेवी की शब्द–सम्पदा का मूल स्रोत संस्कृत भाषा और साहित्य है। उनके गद्य की प्रकृति तत्सम प्रधान है। वे श्बछड़ाश के स्थान पर श्वत्सश का प्रयोग करती हैं। श्रोयाँश के स्थान पर 'रोम' और गर्मी की छुट्टियों के लिए श्ग्रीष्मावकाशश का प्रयोग करना अधिक उचित समझा है। महादेवी जी ने अंग्रेजी के आवश्यक, उपयोगी और उचित शब्दों को

संदर्भ–ग्रंथ :

1. श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा, पृष्ठ–9
2. श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा, पृष्ठ–14
3. वही, पृष्ठ–12
4. स्त्री : मुक्ति का सपना– संपादक अरविंद जैनः लीलाधर मंडला`ई पृष्ठ–111
5. श्रृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, पृष्ठ –44–45
6. श्रृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, पृष्ठ –56
7. वहीं, पृष्ठ – 19
8. नीरजा– महादेवी वर्मा, पृष्ठ– 20
9. दीपशिखा– महादेवी वर्मा, पृष्ठ – 74
10. सा ंध्यगीत– महादेवी वर्मा, पृष्ठ – 51

11. सन्धिनी– महादेवी वर्मा, पृष्ठ – 103
12. सन्धिनी– महादेवी वर्मा, पृष्ठ – 83
13. सन्धिनी– महादेवी वर्मा, पृष्ठ– 125
14. शृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, पृष्ठ –47
15. वही, पृष्ठ– 47–48
16. शृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, पृष्ठ –85